46

दोष किसे दें?

(9:3े–1े:13)

लोग आमतौर अपनी असफलताओं का दोष दूसरों पर लगाते हैं। जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी थी तो आदम ने दोष अपनी पत्नी हव्वा पर लगाया था और हव्वा ने सांप पर दोष लगाया था (उत्पत्ति 3:12, 13)। ''ज़िम्मेदारी'' की परिभाषा ''अलग किया जा सकने वाला बोझ जो आसानी से किसी पड़ोसी ... के कांधों पर डाला जा सके'' के रूप में की गई है।[1] अधिकतर लोग जब कोई सही काम करने में नाकाम रहते हैं तो वे अपने आप को छोड़ कर हर किसी और बात पर दोष निकालना चाहते हैं। ''मेरे माता-पिता की गलती है।'' ''मेरे साथी की गलती है।'' ''समाज दोषी है।'' ''मुझे वैसा अवसर कभी नहीं मिला, जैसा दूसरे बच्चों को मिला।'' ''मैं बीमार हो गया था।''

अपना दोष दूसरों पर लगाने की बात सोचते हुए मैं दिमाग में दो छोटे लड़कों को देखने की कल्पना करता हूं (जो मेरे माता-पिता के घर में रहते थे)। उसने किया है, नहीं उसने किया है; नहीं इसने किया। मैंने एक मां को अपने बच्चे को समझाते हुए यह कहने की बात पढ़ी, ''बिल्ली की पूंछ खींचना बंद करो!'' लड़के ने उत्तर दिया, मैं बिल्ली की पूंछ नहीं खींच रहा। मैंने तो केवल इसे पकड़ा हुआ है, बिल्ली ही आगे को भागती जा रही है।[2]

इस पाठ के वचन में उस प्रश्न पर ध्यान दिया गया है कि अधिकतर यहूदियों द्वारा परमेश्वर को ठुकराने का दोषी कौन था, जबकि कुछ अन्यजातियों ने उसे स्वीकार कर लिया। 9:14-29 में पौलुस ने साबित किया कि परमेश्वर सही है। क्योंकि यह बात सच है इसलिए यहूदियों की दुविधा के लिए यहोवा ज़िम्मेदार नहीं है। तो फिर दोष किसका था? यहूदियों को यह स्वीकार करना पसन्द नहीं होगा, परन्तु उन्हें छोड़कर इसका दोषी और कोई नहीं था।

9:30 में पौलुस ने परमेश्वर की सम्प्रभुता से ध्यान मनुष्य की ज़िम्मेदारी पर दिलाया। इन दो शिक्षाओं के विषय में जो एक-दूसरे के प्रतिकूल लगती हैं, आर. बी. क्यूपर ने कहा:

> मैं उन्हें छत में और ऊपर पुली के ऊपर से दो छेदों में से जाने वाली रस्सियों से मिलाता था। यदि मुझे उनकी सहायता चाहिए तो मुझे उन दोनों को पकड़े रखना होगा। यदि मैं केवल एक को पकड़ता हूं, दूसरे को नहीं, तो मैं गिर जाऊंगा।
>
> ... बच्चों जैसे विश्वास के साथ, मैं उन दोनों रस्सियों को पूरे विश्वास के साथ पकड़ लेता हूं कि अनन्तकाल में देखूंगा कि अन्त में सच्चाई के दोनों धागे एक ही रस्सी का भाग हैं।[3]

जैसा कि अन्य पाठों में देखा गया है, पौलुस ने दोनों शिक्षाओं को मिलाने का कोई प्रयास नहीं किया, परन्तु दृढ़ता से दोनों में विश्वास किया। 9:30-10:21 में उसने अपनी मानवीय ज़िम्मेदारी

पर ज़ोर दिया था। उसने इस बात पर चर्चा की कि अधिकतर यहूदी लोगों को परमेश्वर द्वारा *क्यों* ठुकराया गया था।

मार्ग, जिसकी यहूदियों ने उपेक्षा की (9:30-33)

वास्तविकता (आयतें 30, 31)

पौलुस ने आरम्भ किया, ''अत: हम क्या कहें ?'' (आयत 30क)। अन्य शब्दों में वह पूछ रहा था, ''यहूदियों के ठुकराए जाने की बात पर हम और क्या कहें ?'' पौलुस को क्या कहना *था*। उसका ज़ोर इस बात पर था कि अन्यजातियों को स्वीकार कर लिया गया था क्योंकि उन्होंने यीशु में विश्वास किया था। उसने कहा कि ''अन्यजातियों ने जो धार्मिकता की खोज नहीं करते थे, धार्मिकता प्राप्त की अर्थात उस धार्मिकता को जो विश्वास से है'' (आयत 30ख)।

30 और 31 आयतों में, ''धार्मिकता'' परमेश्वर द्वारा सही ठहराए जाने को कहा गया है। यह वह ''धार्मिकता है जो *विश्वास से* है'' यानी विश्वास के आधार पर परमेश्वर के साथ सही खड़े होना। यहां पौलुस ने फिर से पद के मुख्य विषय को दोहराया कि परमेश्वर हमें हमारे विश्वास के कारण सही गिनता है न कि हमारे कामों के कारण। 9:1-29 में पौलुस ने साबित किया था कि परमेश्वर को *अधिकार* था कि वह जिसे चाहे चुन ले। अब उसने अपने पाठकों को याद दिलाया कि परमेश्वर ने *विश्वासियों* अर्थात यीशु मसीह में विश्वास करने वालों को ग्रहण करना चुना।

अन्यजातियां परमेश्वर की धार्मिकता ''की खोज'' नहीं करती थीं। अनुवादित शब्द ''खोज'' का यूनानी शब्द (*dioko*) का ''सच्चे मन से कोशिश करना'' का संकेत देता है।[4] यह कहना कि अन्यजातियां परमेश्वर के साथ सही खड़े होने के लिए ''सच्चे मन से कोशिश'' नहीं करती थीं, अल्पवक्तव्य है। बेशक इसके अपवाद थे, परन्तु कुल मिलाकर अन्यजातियां अनैतिक, लोभी मूर्तिपूजक थीं (देखें 1:18-32)। आत्मिक मामलों में इतनी कम रुचि लेने के बावजूद अन्यजातियों ने परमेश्वर के साथ सही खड़े होना कैसे पा लिया था ? सुसमाचार सुनने पर उन अन्यजातियों ने अपने पापों को बांध लिया था और प्रभु में विश्वास और आज्ञापालन से प्रभु की ओर लौट आए थे।

अन्यजातियों के विपरीत, ''इस्राएली; जो धर्म की व्यवस्था की खोज करते हुए उस व्यवस्था तक नहीं पहुंचे'' (9:31)। इस बात पर कोई एक मत नहीं है कि इस आयत में पौलुस के मन में कौन सी ''व्यवस्था'' थी। कइयों का मानना है कि वह मूसा की बात कर रहा था; जबकि कई इसे सामान्य व्यवस्था मानते हैं और अन्य एक मूल नियम।[5]

अभी के लिए हम ''की व्यवस्था'' वाक्यांश की चिंता करना छोड़कर इस तथ्य पर ध्यान देते हैं कि अन्यजातियों के विपरीत, यहूदी लोग धार्मिकता पाने के लिए सदियों से कोशिश कर रहे थे। वे अपने कर्मकांड किया करते थे। वे अपनी रीतियों का पालन करते थे। वे अपनी धार्मिक परम्पराओं के प्रति काफ़ी गम्भीर थे। वे सब्त तथा पर्व के दिनों को मानते थे। वे यरूशलेम के मन्दिर की यात्राएं वैसे ही करते थे, जैसे उन्हें बताया गया था। तौ भी ये अपने अपेक्षित गंतव्य तक नहीं पहुंचे।

कारण (आयत 32क)

''किस लिए ? इसलिए कि वे विश्वास से नहीं, परन्तु मानों कर्मों से उस की खोज करते थे'' (आयत 32क)। अब हम ''व्यवस्था'' शब्द के लिए तैयार हैं। यहूदी लोग यह सोचते थे कि व्यवस्था का पालन करके अर्थात कुछ विशेष काम करके धार्मिकता प्राप्त की जा सकती है। जब सुसमाचार सुनाया गया तो वह युक्तिपूर्ण प्रवेश से अपमानित हुए कि वे पापी हैं, जिन्हें उद्धार की आवश्यकता है। उन्होंने यीशु को नकार दिया और क्रूस पर उसकी मृत्यु से उलझन में पड़ गए। वे धार्मिकता की खोज करते थे, परन्तु उनकी दिशा गलत थी। तो फिर आश्चर्य की बात नहीं है कि वे इसे ढूंढ़ नहीं पाए। यदि आप पूर्व की ओर जाना चाहते हैं और आप पश्चिम को निकल जाएं, तो जितने मील आप चलते जाएंगे उतने ही आप अपनी मंजिल से दूर होंगे, न कि उसके निकट।

परिणाम (आयत 32ख, 33)

यदि यहूदी लोग उस मार्ग पर चलते जो परमेश्वर ने उनके लिए बनाया था, तो वे यीशु को मसीहा मान लेते। उन्होंने नहीं माना इसलिए ''उन्होंने उस ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई'' (आयत 32ख; देखें यशायाह 8:13-15)। ''ठोकर खाई'' का अनुवाद *proskopto* से किया गया है, जिसका अर्थ है ''चोट मारना'' और ''ठोकर खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।''[6]

''ठोकर का पत्थर'' यीशु था (देखें 1 पतरस 2:8[7])। भजनकार ने लिखा था, ''राज मिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया है'' (भजन संहिता 118:22)। नये नियम के वक्ताओं और लेखकों ने यह आयत यीशु के लिए इस्तेमाल की (देखें मरकुस 12:10; प्रेरितों 4:11)।

राज मिस्त्रियों के पत्थर को ठुकराने की बात पढ़ते हुए जो ठोकर लगने का पत्थर बन गया था, मेरे ध्यान में मिस्त्रियों के इमारत बनाने का रूपक आता है। वास्तुकार के बनाए नक्शे को नज़रअंदाज करते हुए, जैसे उन्हें लगता है कि होना चाहिए, इमारत खड़ी कर सकते हैं। परिणाम यह हुआ कि जब वहां पर कोने के सिरे का पत्थर लाया जाता है तो उसे निकालकर काम की जगह पर छोड़ दिया जाता है। उनकी बनाई योजना के अनुसार लगने वाले पत्थर लाते हुए, मज़दूरों द्वारा इधर-उधर धकेलने पर वे उस ठुकराए हुए कोने के सिरे के पत्थर पर ठोकर खाते रहते हैं। इसलिए इमारत बनाने के लिए मुख्य सहायक बनने के बजाय इस पत्थर को हानिकारक और चिढ़ाने वाला माना जाता है।

जब यीशु आया, तो वह यहूदियों के मसीहा के विषय में उनके पुराने विचारों से ''मेल'' नहीं खाता था। वह शाही पोशाक नहीं पहनता था। उसने सांसारिक राजा के रूप में मुकुट पहनने से इनकार कर दिया (यूहन्ना 6:15)। उसने रोमियों को पलश्तीन से निकालने के लिए बड़ी सेना इकट्ठी कराने का कोई प्रयास नहीं किया (देखें यूहन्ना 18:36)। यीशु मसीहा के लिए घड़े गए यहूदियों के विचार से मेल नहीं खाता था, जिस कारण उन्होंने उसे ठुकरा दिया। परिणाम यह हुआ कि यीशु उनके लिए बड़ी सिरदर्दी बन गया, एक ऐसी परेशानी जिसे उन्होंने मारकर रास्ते से हटाने की कोशिश की।

यहूदियों ने आपत्ति की होगी कि यदि यीशु *वास्तव में* मसीहा होता, तो इस्राएली उसे निश्चय ही स्वीकार कर लेते। उन्होंने यहां तक निष्कर्ष निकाल लिया होगा कि उसका ठुकराया

जाना यह साबित करता है कि वह मसीहा नहीं है। परन्तु नबियों ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा को इस्राएलियों द्वारा ठुकराया जाएगा। पौलुस ने यशायाह की पुस्तक से 28:16 के साथ 8:14 को मिलाते हुए उद्धृत किया। रोमियों 9:33 आरम्भ होता है ''जैसा लिखा है; देखो मैं सिय्योन [यरूशलेम] में एक ठेस लगने का पत्थर [यशायाह 28:16क] और ठोकर खाने की चट्टान [यशायाह 8:14ख] रखता हूं; और जो उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा'' [यशायाह 28:16क] [यशायाह 8:14ख]। ''ठोकर'' शब्द का अनुवाद यूनानी शब्द *skandalon* से किया गया है, जिससे अंग्रेजी शब्द ''scandal'' तथा ''scandalous'' शब्द मिले हैं।

> *Skandalon* मूल में फंदे के उस भाग को कहा जाता [था] जिससे चारा लगा होता था। ... [नये नियम] में *skandalon* का इस्तेमाल हर जगह रूपक के रूप में किया गया है, और आमतौर पर हर बात के लिए जो पूर्वाग्रह भड़काती है, या दूसरों के लिए रुकावट बनती है या उनके गिरने का कारण बनती है। ...[8]

NCV में ''चट्टान जो उन्हें गिरा देती है'' है।

यहूदियों के लिए सबसे अधिक ठोकर देने वाली बात यह थी कि वह एक आम अपराधी की तरह क्रूस पर चढ़ाया गया था। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को बताया, ''हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण है'' (1 कुरिन्थियों 1:23)। गलातियों 5:11 में उसने ''क्रूस की ठोकर'' की बात की थी। जहां तक यहूदियों की बात थी, क्रूस पर मरना सबसे अधिक नापसन्द की जाने वाली बात थी!

परमेश्वर को मालूम था कि अधिकतर इस्राएली यीशु को ठुकरा देंगे, परन्तु उसे पहले से यह भी पता था कि कुछ यहूदी उसे स्वीकार कर लेंगे। इसी कारण, यशायाह ने अपनी भविष्यवाणी में जोड़ा था, ''और जो उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा'' (रोमियों 9:33ख; यशायाह 28:16ख)। ''लज्जित न होगा'' का अनुवाद मिश्रित शब्द (*kataischuno*) से किया गया है, जो उपसर्ग *kata* के साथ ''लज्जित होना'' (*aischuno*) के लिए शब्द को गहरा देता है।[9] यह हवाला न्याय के दिन लज्जित किए जाने वाले के लिए है, जिसे प्रभु ठुकरा देगा। यीशु ने कहा, ''जो कोई ... मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस से भी लजाएगा'' (मरकुस 8:38)। परन्तु यीशु में विश्वास करने वाला चाहे वह यहूदी हो या अन्यजाति उसे यह शर्मिंदगी नहीं झेलनी पड़ेगी। इसके साथ पौलसु ने आशा की एक बात पर अपने विचार का समापन किया।

जिस मार्ग पर यहूदी लोग चले (10:1-8क)

यहूदियों के पास परमेश्वर द्वारा ठुकराए जाने के लिए अपने अलावा किसी और पर दोष लगाने का कोई कारण नहीं था। क्योंकि उन्होंने सही मार्ग की उपेक्षा की थी (9:31, 32) और गलत मार्ग पर चलने पर अड़े रहे थे (आयत 32क)। अध्याय 1 के पहले भाग में पौलुस ने दो मार्गों में जिन पर लोग चल सकते हैं, अन्तर किया। ऐसा करके उसने इस विचार को रेखांकित किया कि यहूदियों ने *गलत* मार्ग चुना था।

पौलुस का जुनून (आयत 1)

10:1 में पौलुस ने फिर अपने देशवासियों के लिए अपने प्रेम और लगाव की पुष्टि की (9:1-3 से तुलना करें)। उसने कहा, ''हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उनके लिए परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएं।'' इस आयत में, ''हे भाइयो'' मसीही लोगों के लिए और ''उनके'' यहूदियों के लिए है (देखें NIV)। पौलुस यहूदियों के खोए होने की स्थिति पर चिंतित, बल्कि बहुत चिंतित था। उसने प्रार्थना की ''कि वे उद्धार पाएं'' यानी वे यीशु की सच्चाई को ग्रहण करने वाले बनें। फिलिप्स के अनुसार मैं ''अपने-अपने दिल की गहराई से चाहता और परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इस्राएलियों का उद्धार हो'' है! क्या अपने आस-पास रहने वालों, संसार के खोए हुओं के लिए आपकी और मेरी चिंता ऐसी है? क्या हम उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं?

यहूदियों की समस्या (आयतें 2-4)

पौलुस ने आगे कहा, ''क्योंकि मैं उन की गवाही देता हूं, कि उन को परमेश्वर की लिए धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमान के साथ नहीं'' (आयत 2)। ''मैं गवाही देता हूं'' का अनुवाद *martureo* से किया गया है, जिसका अर्थ ''गवाह होना''[10] ''अपनी आंखों से देखा होने के आधार पर।''[11] पौलुस इस बात में गवाही दे सकता था क्योंकि उसे अपने पिछले जीवन का हाल मालूम था। यरूशलेम की सभा को उसने बताया, ''मैं तो यहूदी मनुष्य हूं, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर में गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया गया, और बाप-दादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया; और *परमेश्वर के लिए* ऐसी *धुन* लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो'' (प्रेरितों 22:3; देखें गलातियों 1:13, 14; फिलिप्पियों 3:6)।

''धुन'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द (zeal) यूनानी भाषा के शब्द *zelos* का लिप्यंतरण है, जो ''उबालना,'' ''गरम होना'' (*zeo*) के शब्द से निकला है।[12] परमेश्वर हम से उसके लिए ''आग पर'' होना चाहता है। यीशु ने लौदिकिया की कलीसिया से कहा ''सो इसलिए कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म [*zestos*], मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं'' (प्रकाशितवाक्य 3:16)। जब मसीह ने मन्दिर में से व्यापारियों को निकाला था, तो कहा गया कि परमेश्वर के घर की उस धुन ने उसे ''खा'' लिया था (देखें यूहन्ना 2:17)।

परन्तु धुन को नियन्त्रित किया जाना आवश्यक है। अनियन्त्रित धुन पर विचार करने पर मेरा ध्यान उस विनाश की ओर जाता है, जो अनियन्त्रित आग से हो सकता है। जब मैं पहली कक्षा में पढ़ता था तो मैं कुछ माचिसें चुपके से बाहर ले गया और अचानक अपने घर के पास घास को आग लगा दी। मुझे याद है कि जब पिता जी और पड़ोसी किसान हमारे घर और पास की और संपत्ति को भस्म होने से बचाने के लिए उन लपटों को बुझाने का प्रयास कर रहे थे तो मैं कितना डरा हुआ था।

धुन को ज्ञान के द्वारा संचालित और निर्देशित किया जाना आवश्यक है। बुद्धिमान ने कहा है कि ''ज्ञानरहित जोश अच्छा नहीं'' (नीतिवचन 19:2क; NLT)। रोमियों 10:2 में अनुवादित शब्द ''बुद्धिमानी'' उपसर्ग *epi* से मज़बूत किया गया ''ज्ञान'' (*gnosis*) शब्द *epignosis* है। *Epignosis* '' 'सही या पूर्णज्ञान' का संकेत देता है।''[13] यहूदी लोग धुन से भरे थे, परन्तु उनमें ज्ञान की कमी थी। उनकी धुन ''गलत सिखाई गई धुन'' (NEB), ''भ्रमित'' धुन (JB), ''गुमराह धुन'' (LB) थी।

आज बहुत से लोगों का मानना है कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए केवल धार्मिक धुन या जुनून आवश्यक है। एक प्रसिद्धि विश्वास को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: ''जब तक कोई ईमानदार और निष्कपट है, वह स्वर्ग में ही जाएगा।'' रोमियों 10:2 यह घोषणा करता है कि ऐसा नहीं है। ''निष्कपटता काफी नहीं है, क्योंकि निष्कपटता से हमें गुमराह किया जा सकता है।''[14]

ज्ञानी हुए बिना जुनूनी होने की ख़तरनाक स्थिति को कई प्रकार से दिखाया जा सकता है। कई लेखक ज्ञान को प्रकाश से मिलाते हैं (देखें भजन संहिता 119:105)। वे सुझाव देते हैं कि बिना ज्ञान के धुन वाला आदमी अंधेरे में तेज़ी से भाग रहे आदमी की तरह है, जिसे पता नहीं है कि वह कहां जा रहा है। ऐसा ही एक उदाहरण एक मोटरगाड़ी का आता है, जिसमें धुन मोटर है और स्टेरिंग ज्ञान है। एक पुरानी कार को मैदान के बाहर ले जाते हुए आदमियों की भी एक कहानी है। एक आदमी ने ड्राइवर से पूछा, ''हम कहां जा रहे हैं?'' ड्राइवर ने उत्तर दिया, ''मुझे नहीं मालूम, परन्तु बड़ा मज़ा आ रहा है!''

यहूदी लोगों को दिक्कत थी क्योंकि उन में बिना ज्ञान के धुन थी। मुझे और आपको इस बात को समझना आवश्यक है कि बिना धुन के ज्ञान होना भी उतना ही बुरा है पर प्रभु की दृष्टि में दोनों में से कोई भी स्थिति स्वीकार्य नहीं है।

बेशक यहूदी लोगों ने अपने ज्ञान की कमी से इनकार किया होगा क्योंकि वे बाइबल के कई हवाले दे सकते थे। याद रखें कि रोमियों 10:2 में अनुवादित शब्द ''बुद्धिमानी'' का अर्थ ''पूर्ण *ज्ञान*'' है। यहूदियों को कुछ बातों का पता था, परन्तु वे सबसे महत्वपूर्ण बात से अनजान थे। आयत 3 आरम्भ होती है, ''क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान'' थे। ''परमेश्वर की धार्मिकता'' का अर्थ यहां परमेश्वर का चरित्र नहीं, बल्कि मनुष्यों को धार्मिक गिनने का उसका प्रबन्ध है। अन्य शब्दों में यह अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध की बात है। यहूदी लोग जान-बूझकर इससे अनजान थे, क्योंकि यह उनके द्वारा बनाए व्यवस्था/कर्मों से मेल नहीं खाता था।

पौलुस ने कहा, ''और अपनी धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापन करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए'' (आयत 3क, ख)। यह प्रेरित फिर से व्यक्तिगत अनुभव से बात कर रहा था। मसीह के पीछे चलने के लिए छोड़ दी गई बातों की सूची देते हुए फिलिप्पियों 3 में उसने इच्छा व्यक्त की कि मैं ''उस में पाया जाऊं; न कि *अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है,* उस धार्मिकता के साथ, जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है'' (आयत 9)।

पौलुस ने जो कुछ यहूदियों के विषय में कहा, वही आम लोगों के विषय में भी कहा जा सकता है परमेश्वर के ढंग से संतुष्ट न होने के कारण लोगों ने स्वर्ग में जाने के लिए अपने-अपने ढंग बनाने की कोशिशें की हैं।[15] बहुतों का पसंदीदा ''भजन'' है कि ''मैंने इसे अपने ढंग से किया।''[16] परमेश्वर चीज़ों को अपने ढंग से करने में हमारी सहायता करे न कि हमारे ढंग से!

यहूदी लोग धर्मी गिने जाने के लिए व्यवस्था का पालन करने पर निर्भर थे। अगली दो आयतों में पौलुस ने इसके असम्भव होने को समझाया। आयत 4 कहती है कि ''क्योंकि हर एक विश्वास करने वाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।'' ''अन्त'' का अनुवाद *telos* से किया गया है, जो कई सम्भावित अर्थ वाला शब्द है। इसका अर्थ ''अन्त

[समाप्ति]'' हो सकता है, जैसे कि NASB में संकेत है; परन्तु इसका अर्थ ''लक्ष्य'' भी हो सकता है, जैसा कि NASB वाली मेरी प्रति में बीच में दिए गए नोट्स हैं। अधिकतर अनुवादों में ''अन्त'' या इसके समान अनुवाद हैं (NASB; NIV; RSV; NEB; JB; NCV; TEV), परन्तु कुछ एक में ''लक्ष्य'' या इसके समान है (CJB; मेकोर्ड)।

मूसा की व्यवस्था के लिए दोनों में से कोई भी परिभाषा सही है। वास्तव में दोनों ही एक-दूसरे से मेल खाते हैं।[17] व्यवस्था के ''लक्ष्य'' के रूप में मसीह के सम्बन्ध में पौलुस ने गलातियों 3 में लिखा कि ''इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें'' (आयत 24)। फिर उसने जोड़ा कि ''परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक [व्यवस्था] के अधीन न रहे'' (आयत 25)। मसीह के आने का एक परिणाम अपने लोगों के लिए परमेश्वर के वर्तमान प्रकाशन के रूप में व्यवस्था का ''अन्त'' था।[18] दोनों ही परिभाषाएं यह घोषित करती हैं कि यहूदियों को व्यवस्था को मानने की कोशिश करना छोड़कर यीशु की ओर लौट आना चाहिए था, जो ''व्यवस्था का अन्त'' था।

रोमियों 10:4 को छोड़ने से पहले हमें यह देखना चाहिए कि पौलुस सम्भवतया केवल मूसा की व्यवस्था की बात ही नहीं कर रहा था। वह ''यहूदी समस्या'' की बात कर रहा था, इसलिए निश्चय ही उसके मन में मुख्य रूप से मूसा की व्यवस्था थी। परन्तु हम सामान्य प्रासंगिकता भी बना सकते हैं, क्योंकि आयत 4 में यूनानी धर्मशास्त्र में ''व्यवस्था'' के लिए शब्द से पहले कोई निश्चित उपपद नहीं है। *Telos* का अर्थ ''अन्त'' या ''समापन'' के अर्थ में इस्तेमाल करते हुए, हम इस आयत को इस प्रकार विस्तार दे सकते हैं: ''क्योंकि हर एक विश्वास [यीशु में] करने वाले के लिए धार्मिकता [जो कि परमेश्वर द्वारा दी जाती है] के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त [पाने के लिए कोशिश करने के माध्यम के रूप में मानना] है।''

मूसा की घोषणाएं (आयतें 5-8क)

आगे बढ़ते हुए पौलुस ने फिर से व्यवस्था का पालन करने से धार्मिकता पाने की कोशिश करने के विनाशकारी दोष को आयत 5 में दिखाया। उसने लिखा, ''क्योंकि मूसा ने यह लिखा है, कि जो मनुष्य उस धार्मिकता पर जो व्यवस्था से है, चलता है, वह इसी कारण जीवित रहेगा'' (आयत 5)। स्पष्टतया पौलुस के मन में लैव्यव्यवस्था 18:5 था, जहां परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा था, ''इसलिए तुम मेरे नियमों और मेरी विधियों को नियन्त्रण मानना; जो मनुष्य उन्हें माने वही जीवित रहेगा।'' लैव्यव्यवस्था 18:5 में ''जीवित रहेगा'' और रोमियों 10:5 ''जीवित रहेगा'' का एक ही अर्थ है।[19] JB में है ''जो व्यवस्था का पालन करते हैं, वे इसी से जीवन निकालेंगे।''

परमेश्वर ने इस्राएलियों को बताया कि यदि वे उसकी विधियों और नियमों को मानते तो उन्हें जीवन मिलना था। जीवन मिलना अच्छा लगता है, तो दिक्कत क्या थी? दिक्कत यह थी कि व्यवस्था के द्वारा जीवन को पाने के लिए उन्हें व्यवस्था को *पूर्णतया* मानना था। (जो कोई व्यवस्था को मानने में नाकाम रहता, वह श्रापित था [देखें व्यवस्थाविवरण 27:26; गलातियों 3:12, 13]।) CEV में रोमियों 10:5 मूसा के शब्दों का अनुवाद इस प्रकार है: ''यदि तुम मुझ से चाहते हो कि जीऊं, तो तुम्हें व्यवस्था की कही गई *सब* बातों को मानना आवश्यक है।'' परन्तु कोई ऐसा नहीं है कि जो सब आज्ञाओं को बिना किसी दोष के पूरा कर पाया हो। इस कारण

व्यवस्था/कर्मों के प्रबन्ध के आधार पर धार्मिकता पाना *असम्भव* था।

उसके विपरीत परमेश्वर के अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध के आधार पर धार्मिकता प्राप्त करना सम्भव *था*। अगली कुछ आयतों का संदेश यही है। यह वह संदेश है जिसमें पहली सदी के यहूदी पाठकों की प्रसिद्ध अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल किया गया है, परन्तु हमारे लिए नई हैं।

आयत 6 आरम्भ होती है, ''परन्तु जो धार्मिकता [परमेश्वर के साथ सही खड़े होना] विश्वास से [अनुग्रह/विश्वास का प्रबन्ध] है, वह यूं कहती है।'' पौलुस ने व्यवस्था/कर्मों के प्रबन्ध के विषय में केवल मूसा की बात की थी (आयत 5)। अब उसने अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध का वक्ता होने के रूप में धार्मिकता को व्यक्तिगत बनाया। ''विश्वास से धार्मिकता'' यहां क्या कहती है? सुनें:

> ... जो धार्मिकता विश्वास से है, वह यों कहती है, कि तू अपने मन में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? (अर्थात मसीह को उतार लाने के लिए!) या गहिराव में कौन उतरेगा? (अर्थात मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिए!) परन्तु क्या कहती है? यह कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है (आयतें 6-8क)।

पौलुस व्यवस्थाविवरण 30 के शब्दों का इस्तेमाल कर रहा था, जो इस्राएलियों के नाम मूसा के विदाई संदेश का भाग था:

> देखो, यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, वह न तो तेरे लिए अनोखी, और न दूर है। और न तो यह आकाश में है, कि तू कहे, कि *कौन* हमारे लिये *आकाश में चढ़कर* उसे हमारे पास ले आए, और हम को सुनाए कि हम उसे मानें? और न यह समुद्र पार है, कि तू कहे, *कौन* हमारे लिए *समुद्र पार जाए,* और उसे हमारे पास ले आए, और हम को सुनाए कि हम उसे मानें? *परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुंह और मन ही में है* ताकि तू इस पर चले (व्यवस्थाविवरण 30:11-14)।

ध्यान दें कि ''समुद्र'' की जगह पौलुस ने ''अधोलोक'' शब्द का इस्तेमाल किया। ''अधोलोक'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द abyss यूनानी के abussos का लिप्यंतरण है ''अगाध।''[20] यूनानी पुराने नियम में, अधोलोक (''गहराइयां'') का सम्बन्ध आम तौर पर गहरे पानी से जुड़ा होता था (देखें भजन संहिता 68:22)। रोमियों 10:7 में KJV में ''गहरे में कौन उतरेगा?'' है (देखें NIV)। पौलुस की प्रासंगिकता मसीह के जी उठने से थी, इसलिए सम्भवतया उसके मन में मृतकों का वास (NLT) या कब्र (मैकोर्ड) दोनों में से कोई हो सकता है। संक्षिप्त परिभाषा अनावश्यक है। पौलुस ने जितना ऊंचा कोई जा सकता था, उसका अर्थ देने के लिए ''आकाश'' और नीचे से नीचे जा सकने वाले स्थान का संकेत देने के लिए ''अधोलोक'' शब्द का इस्तेमाल किया।

''अधोलोक'' शब्द के पौलुस के विकल्प के अलावा वह व्यवस्थाविवरण 30:11-14 के भागों की शब्दावली की नकल के बहुत करीब आया। परन्तु उसने इन व्याख्याओं को जोड़कर अपने उद्देश्य के लिए इन शब्दों का इस्तेमाल किया: ''अर्थात मसीह को उतार लाने के लिए'' और ''अर्थात मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिए।'' पुराने नियम के वाक्य तथा अपनी व्याख्याओं को जोड़कर पौलुस क्या संदेश देना चाहता था? इसकी कुंजी सम्भवतया

व्यवस्थाविवरण 30:11-14 के आरम्भिक शब्दों में मिलती है: ''देखो, यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, [1] वह न तो तेरे लिए अनोखी, और [2] न दूर है'' (आयत 11)।

रोमियों 10:6-8क में अर्थात पौलुस के संदेश का पहला भाग यह है कि सुसमाचार की शर्तें अत्यधिक कठिन नहीं हैं। लियोन मौरिस के अनुसार पौलुस ''उन अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल कर रहा था, जो असम्भव कही जाने वाली बात के लिए लोकोक्ति बन गए'' थे।[21] परमेश्वर ने हमसे मसीह को नीचे लाने के लिए आकाश में ऊपर जाने जैसा अतिमानवीय कार्य या, मसीह को ऊपर लाने के लिए अधोलोक में उतरने की आज्ञा नहीं देता। हमें केवल अपने विश्वास को व्यक्त करने के लिए कहा जाता है (मरकुस 16:16)।

पौलुस के संदेश का दूसरा भाग पहले भाग से मिलता है कि धार्मिकता प्राप्त करना किसी के लिए भी दूर की कौड़ी नहीं है क्योंकि सब लोग प्रभु में और उसके ढंग में भरोसा करने के योग्य हैं।[22] पौलुस यहूदियों को यह आश्वस्त कर सकता था कि ''वचन निकट है'' क्योंकि जब भी वह किसी नई जगह गया, उसने पहले यहूदियों को सुसमाचार सुनने का अवसर दिया (प्रेरितों 13:14; 14:1; 17:1; 18:19; देखें रोमियों 1:16)।

यह रोमियों 10:6-8क का मूल संदेश है; परन्तु प्रासंगिकता के पौलुस के शब्दों को पढ़ते हुए, मुझे आश्चर्य होता है कि उसमें उन दो विशेष असम्भव कार्यों को चुना क्योंकि उन से यहूदी अविश्वास की झलक मिलती थी। क्योंकि यहूदी लोगों ने यीशु को मसीहा स्वीकार नहीं किया था, वे यह नहीं मानते थे कि मसीहा स्वर्ग से ''नीचे लाया गया'' था (अर्थात वह सचमुच आ गया था)। इसके अलावा उनका यह विश्वास नहीं था कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा था। 6 और 7 आयतों को पौलुस की पुष्टि के रूप में देखा जा सकता है कि मसीहा को नीचे लाने के लिए किसी को भी आकाश में ऊपर जाना अनावश्यक था, क्योंकि वह तो पहले ही आ चुका था। न ही किसी को मसीह को मरे हुओं में से ऊपर लाने के लिए अधोलोक में उतरने की आवश्यकता थी, क्योंकि वह पहले ही जी उठा था।

व्यवस्थाविवरण 30:11-14 इस टिप्पणी पर समाप्त होता है: ''परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुंह और मन ही में है, *ताकि तू इस पर चले*'' (आयत 14)। मूसा ने यह स्पष्ट कर दिया कि ''परमेश्वर की इच्छा ... इस्राएल पर स्पष्ट रूप से प्रकट कर दी गई थी ([व्यवस्थाविवरण] 29:29)। इसलिए इस्राएल के *मुंह* और *मन* समझ में होना, कुछ ऐसा था जिस पर काम किया जा सकता था: *तुम इसे कर सकते हो।*''[23] पौलुस ने व्यवस्था के विषय में मूसा के शब्द लेकर उन्हें सुसमाचार पर लागू किया। बेशक पौलुस यह नहीं कह रहा था कि सुसमाचार यहूदियों के दिलों और मुंहों में *था,* बल्कि यह कि यह हो *सकता* है और होना *चाहिए*। वह सुसमाचार तक पहुंच तथा उसकी उपलब्धता पर ज़ोर दे रहा था।

मार्ग, जिसकी यहूदियों को आवश्यकता थी (10:8-13)

उद्धार देने वाला संदेश (आयतें 8-10)

पौलुस ने सुसमाचार की संक्षिप्त चर्चा में ले जाने के लिए मूसा के शब्दों का इस्तेमाल किया, ''वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है, जो हम प्रचार

करते हैं'' (रोमियों 10:8)। ''विश्वास का वचन'' वह वचन है, जो विश्वास दिलाता है (रोमियों 10:17) और ''विश्वास को मानने के लिए आवश्यक संदेश *अर्थात* सुसमाचार''[24] (देखें रोमियों 1:16)।

''विश्वास का वचन'' में क्या था? हमें परमेश्वर के अनुग्रह और यीशु की मृत्यु की बात पढ़ने की उम्मीद हो सकती है। इसके बजाय व्यवस्थाविवरण 10:14 के शब्दों से संकेत लेते हुए पौलुस ने परमेश्वर के प्रेम की कहानी को मनुष्य के प्रत्युत्तर की बात की थी: ''यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे,[25] कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा'' (रोमियों 10:9)। 10:1 में पौलुस ने कहा था कि वह इस्राएलियों के उद्धार के लिए प्रार्थना कर रहा था। अब उसने बताया कि वे उद्धार *कैसे* पा सकते हैं: मुंह से अंगीकार करके और मन से विश्वास करके। क्रम में मुंह से अंगीकार करना मन में विश्वास करने के बाद आता है, परन्तु पौलुस उस क्रम की झलक दे रहा था, जिसका इस्तेमाल मूसा ने व्यवस्था में 30:14 में किया था। उस आयत में ''तेरे मुंह में'' का वचन ''मन में'' से पहले आया। पौलुस ने हमारे वचन पाठ की आयत 10 में कालक्रम को उलट दिया।

रोमियों 10:9 में सुसमाचार की दो अतिआवश्यक असंशोधनीय बातों का स्पर्श मिलता है: यह तथ्य कि परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया (देखें 1 कुरिन्थियों 15:17) और यह तथ्य कि यीशु प्रभु है (देखें कुलुस्सियों 2:6) ''प्रभु'' (*kurios*) का इस्तेमाल यहां ईश्वरत्व के अर्थ में किया गया है। सप्तति अनुवाद में परमेश्वर के पवित्र नाम का हवाला देने के लिए *kurios* का इस्तेमाल छह हज़ार से अधिक बार हुआ है।[26] पहले सुसमाचार प्रवचन में पौलुस ने इन दो मुख्य विचारों को शामिल किया। उसने घोषणा की कि ''परन्तु *उसी को* [यीशु] *परमेश्वर ने* मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर *जिलाया*: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता'' (प्रेरितों 2:24)। फिर अपने प्रवचन के अन्त के निकट, वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा: ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, *प्रभु* भी ठहराया और मसीह भी'' (आयत 36)।

इन तथ्यों पर विश्वास करने और अंगीकार करने के महत्व पर रोमियों 10:10 में फिर से ज़ोर दिया गया है, जो स्वाभाविक (कालक्रमिक) क्रम में दोनों का डालता है। ''क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।'' ''धार्मिकता'' परमेश्वर के साथ सीधे खड़े होना और ''उद्धार'' का इस्तेमाल इस आयत में एक-दूसरे के स्थान पर किया गया है। विश्वास और अंगीकार दोनों का उद्देश्य एक ही है: उद्धार पाना और धर्मी ठहराया जाना।

9 और 10 आयतें बाइबल छात्र के लिए विशेष दिलचस्पी रखती हैं क्योंकि वे विश्वास के अंगीकार के महत्व के जो हमारे मनों में है, मुख्य हवाले हैं। यीशु ने कहा, ''जो कोई मुनष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा'' (मत्ती 10:32)। यूहन्ना ने लिखा, ''जो कोई यह मान लेता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है; परमेश्वर उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर में'' (1 यूहन्ना 4:15; देखें आयत 2)। KJV में, हब्शी खोजे के मन परिवर्तन में हमें खोजे तथा सुसमाचार प्रचारक के बीच हुई यह बातचीत मिलती है:

> मार्ग में चलते-चलते वे [खोजा और फिलिप्पुस] किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया (प्रेरितों 8:36-38)।

अधिकतर विशेषज्ञ मानते हैं कि आयत 37 मूल धर्म शास्त्र का भाग नहीं थी। इसके साथ ही विद्वान इस पर सहमत हैं कि यह आयत आरम्भिक कलीसिया के व्यवहार को वैसे ही दर्शाती है, जैसे लोग बपतिस्मा लेने से पूर्व यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं।

रोमियों 10:9, 10 में बताए गए अंगीकार में निश्चय ही बपतिस्मा लेने से पहले किया गया अंगीकार शामिल है,[27] परन्तु यह केवल यहीं तक सीमित नहीं है। आयत 10 में वर्तमानकाल का इस्तेमाल किया गया है, जो निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। CJB में है ''भरोसा रखते हुए जाता और ... लोगों में स्वीकृति पाना'' है। बाइबल गुप्त शिष्यता की वकालत नहीं करती। आरम्भिक मसीही लोग मृत्यु का सामना होने के बावजूद अपने विश्वास का निडरता से प्रचार करते हैं।

यह निर्णायक है कि हम यीशु में विश्वास करें। यह भी महत्वपूर्ण है कि हम इतनी मज़बूती से विश्वास करें कि दूसरों को बता सकें यानी दूसरों के सामने बता सकें। उद्धार पाने के लिए विश्वास और अंगीकार दोनों आवश्यक हैं। बिना अंगीकार के विश्वास कायरता है और बिना विश्वास के अंगीकार दिखावा है।[28]

कुछ लोग जो ''केवल विश्वास से उद्धार'' की वकालत करते हैं, पौलुस की इस शिक्षा से परेशान होते हैं कि उद्धार के लिए अंगीकार करना आवश्यक है। ''केवल विश्वास'' की आम इस्तेमाल होने वाली परिभाषा है ''विश्वास जमा कुछ नहीं, मनफी कुछ नहीं।'' परन्तु रोमियों 10:9, 10 में विश्वास जमा अंगीकार है। कुछ अनुवादक अंगीकार को विश्वास से अलग श्रेणी में रखने का प्रयास करते हैं। वे आयत 10 को कुछ इस प्रकार व्यक्त करते हैं: ''मन से व्यक्ति विश्वास करता है, जिसका परिणाम होता है, और मुंह से वह अंगीकार करता है, जो उसके उद्धार की *पुष्टि करता* है।'' परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में विश्वास और अंगीकार दोनों के ही सम्बन्ध में इस्तेमाल किया गया है। ''का परिणाम'' वाक्यांश यूनानी उपसर्ग *eis* का अनुवाद है, जिसका अर्थ मुख्यतया ''में'' है।[29] विश्वास व्यक्ति को धार्मिकता/उद्धार ''में'' रखता है, जबकि अंगीकार व्यक्ति को उद्धार/धार्मिकता ''में'' रखता है। विश्वास और अंगीकार *दोनों ही* उद्धार/धर्मी ठहराए जाने के लिए आवश्यक हैं।

कई बार मैंने किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बाइबल अध्ययन किया है, जिसने यह ''साबित'' करने के लिए कि लोगों का उद्धार केवल विश्वास से होता है इसलिए बपतिस्मा उद्धार के लिए आवश्यक नहीं है, अध्ययन किया है। मुझे यह बात हमेशा हैरान करती है क्योंकि रोमियों 10:9, 10 यह *नहीं* सिखाता कि ''विश्वास जमा कुछ नहीं, मनफ़ी कुछ नहीं।'' यह विश्वास *जमा* अंगीकार की शिक्षा देता है। दोनों का आपस में निकट सम्बन्ध है, परन्तु दोनों एक-दूसरे के पर्याय नहीं हैं। कोई बिना अंगीकार किए विश्वास कर सकता है (देखें यूहन्ना 12:42, 43) और बिना विश्वास किए अंगीकार किया जा सकता है (मत्ती 7:21-23; लूका 6:46)।

जब मैं यह ध्यान दिलाता हूं कि रोमियों 10:9, 10 में पौलुस ने विश्वास जमा अंगीकार की शिक्षा दी, तो आम तौर पर लोगों की प्रतिक्रिया होती है ''परन्तु अंगीकार विश्वास की *अभिव्यक्ति* है।'' यह सही है, परन्तु यदि विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा में सचमुच में अंगीकार की अभिव्यक्ति को शामिल किया जा सकता है तो इसमें परमेश्वर द्वारा ठहराई अन्य अभिव्यक्तियों, जैसे मन फिराव तथा बपतिस्मा को शामिल नहीं किया जा सकता (रोमियों 2:4; 6:3-6)? ध्यान दें कि प्रेरितों 2 में पतरस ने मन फिराव तथा बपतिस्मे के सम्बन्ध में इसी अवसर में *eis* का इस्तेमाल किया था, जिसका इस्तेमाल रोमियों 10 में विश्वास और अंगीकार के सम्बन्ध में पौलुस ने किया। पतरस ने पापियों को आज्ञा दी, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

एक विश्वव्यापी संदेश (आयतें 11-13)

अपने वचन पाठ में आगे बढ़ते हुए हम रोमियों 10:11 में आते हैं, जहां पौलुस ने फिर से पुराने नियम का एक उपयुक्त पद्य दिया, जिसका इस्तेमाल उसने थोड़ी देर पहले किया था (देखें 9:33): ''क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा'' [यशायाह 28:16]।'' विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराए जाने पर अपने मुख्य विषय पर लौटने के बाद पौलुस ने लिखा, ''यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं'' (रोमियों 10:12क)। अध्याय 3 में उसने कहा था कि यहूदियों और अन्यजातियों में ''कुछ भेद नहीं'' (आयत 22); परन्तु वहां वह दिखा रहा था कि उद्धार *की आवश्यकता* के सम्बन्ध में उनमें कोई अन्तर नहीं है, ''इसलिए कि सब [यहूदियों और अन्यजातियों दोनों] ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (आयत 23)। 10:12 में पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि उद्धार *के आधार* के सम्बन्ध में कोई भेद नहीं है क्योंकि सबका आधार विश्वास के आधार पर होता है। एफ. एफ. ब्रूस ने लिखा:

> रोमियों के तर्क में एक आरम्भिक अवस्था में ... ''कुछ भेद नहीं है'' शब्दों में एक कठोर स्वर था, क्योंकि उन्होंने यहूदियों और अन्यजातियों को इकट्ठे परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने और व्यक्तिगत प्रयास से उसकी स्वीकृति पाने की अक्षमता का दोष लगाया था ... ; अब उन्हीं शब्दों में आनन्द का स्वर है, क्योंकि वे यहूदियों और अन्यजातियों दोनों में यह घोषणा करते हैं कि परमेश्वर के अनुग्रह के फाटक उनके प्रवेश के लिए खुले हैं, यानी मसीह में दी जाने वाली उसकी सेंत-मेंत क्षमा विश्वास से दावा करने वाले सब लोगों के लिए है।[30]

पौलुस ने जोड़ा, ''इसलिए कि वह सब का प्रभु [यहूदी हों या अन्यजाति; देखें आयत 3:29, 30] है; और अपने सब [यहूदी या अन्यजाति] नाम लेने वालों के लिए [आत्मिक] उद्धार है'' (रोमियों 10:12क)। संसार के सबसे धनवान लोगों पर विचार करें।[31] वे चाहे जितने भी धनवान हों, उनकी सम्पत्ति की एक सीमा है, परन्तु परमेश्वर की सम्पत्ति में कोई सीमा नहीं है। जे. बी. में कहा गया है कि ''... प्रभु इतना धनवान है, परन्तु कई लोग उसकी सहायता मांगते हैं।''

''प्रभु का नाम [लेना]'' (आयत 13) सहायता पाने के लिए उसका नाम पुकारना है। यह पाठ करने का कोई ''जादुई फॉर्मूला'' नहीं, बल्कि ''कमी और आवश्यकता का बोध होने से प्रभु को पुकारना है और यह वास्तविक विश्वास होने पर होता है कि प्रभु पर भरोसा किया जा सकता है।''[32] जिम मैक्विगन ने लिखा है कि ''प्रभु का नाम लेना'' ''आवश्यकता के समय किसी की पुकार'' है।[33]

''उसका नाम लें'' (आयत 14) वाक्यांश योएल 2:32 पर आधारित है जिसे पौलुस ने आयत 13 में उद्धृत किया, ''जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।'' योएल की आयत का सम्बन्ध ''यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन'' के आने से है (योएल 2:31)। और ''यहोवा'' वहां परमेश्वर को कहा गया है। डग्लस जे. मू ने लिखा है, '' 'प्रभु' योएल में याहवाह है, जो परमेश्वर की वाचा का नाम है। परन्तु पौलुस ने इस 'प्रभु' को यीशु से जोड़ा (देखें रोमियों 10:9, 12)। ... फिर तो आयत 13 इस बात का महत्वपूर्ण प्रमाण है कि आरम्भिक मसीही यीशु को परमेश्वर मानते थे।''[34]

रोमियों 10:12, 13 का इस्तेमाल कुछ लोग सामान्य अर्थ में आज्ञापालन की आवश्यकता तथा विशेष रूप से बपतिस्मे को नकारने की कोशिश के लिए करते हैं। यह ज़ोर देते हुए कि ''प्रभु को पुकारने'' का किसी का ढंग बार-बार कथित ''पापी की प्रार्थना'' कहना है, वे कहते हैं, ''व्यक्ति को केवल प्रभु का नाम पुकारने की आवश्यकता है।'' परन्तु संदर्भ में 12 और 13 आयतों में प्रभु का नाम पुकारना 10 और 11 आयतों वाले विश्वास करने और अंगीकार करने की तरह ही है। इसके अलावा पतरस ने प्रेरितों 2:21 में योएल से वही वचन उद्धृत किया, और फिर अपने सुनने वालों को मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए कहा (प्रेरितों 2:38)। इसके अलावा हमारे पास परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया एक उदाहरण है, जिसमें ''[प्रभु का] नाम पुकारने'' में बपतिस्मा लेना शामिल था। प्रचारक हनन्याह ने शाऊल से कहा, ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। अन्त में आयत 10 वाले विश्वास करने और अंगीकार करने की तरह, सहायता के लिए प्रभु का नाम लेना कुछ ऐसा है, जो अपने पूरे जीवन में करने के लिए विश्वासी मसीही *जारी रखता है* (देखें 1 कुरिन्थियों 1:2; 2 तीमुथियुस 2:22)।

रोमियों 10:9-13 पर विवाद से आपका ध्यान उस सच्चाई से जो पौलुस सिखा रहा था, हट न जाए। वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि परमेश्वर के पास उद्धार के दो ढंग नहीं थे, जिसमें से एक यहूदियों के लिए हो और दूसरा अन्यजातियों के लिए। इसके बजाय यहूदियों का और अन्यजातियों का उद्धार एक ही प्रकार से होगा। यानी यीशु में विश्वास करके और अपने विश्वास को व्यक्त करके। यदि यहूदियों का उद्धार नहीं होता, तो वे अपने किसी दूसरे पर दोष नहीं लगा सकते थे। यह इसलिए होना था क्योंकि उन्होंने यीशु को मसीहा और अपना उद्धारकर्त्ता मानने से इनकार कर दिया।

सारांश

इस पाठ में हमने पूछा, ''परमेश्वर द्वारा अधिकतर यहूदियों को ठुकराने का दोषी कौन था?'' हमने यह निष्कर्ष निकाला कि अपने खोए होने की स्थिति के लिए ज़िम्मेदार यहूदी स्वयं ही थे।

एक तस्वीर जो ध्यान में आती है वह किसी दूसरे बच्चे की ओर इशारा करते एक बच्चे की है, जिसके हाथ में बिस्कुट है और वह शिकायत कर रहा है, ''उसके पास बिस्कुट है और मेरे पास नहीं है!'' इस सब के दौरान पहले बच्चे के पिता ने हाथ में बिस्कुट पकड़ा हुआ है और वह उसे कह रहा है, ''पर तेरे लिए मेरे पास है! तुझे केवल इसे लेना है!''

हो सकता है कि हम यहूदियों को देखकर चकित हों, ''तुमने यीशु को स्वीकार करके उद्धार क्यों नहीं पाया?'' हम यीशु को उनके ठुकराने के बेतुकेपन और शिकायत करने पर विचार कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें ठुकरा दिया। क्या यह हो सकता है कि हम यहूदियों की आलोचना करते हुए *अपने आपको दोषी ठहराएं*? क्या मसीहा और अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में *हमने* यीशु को ग्रहण कर लिया है? क्या हम मानते हैं कि वह मरे हुओं में से जी उठा था, और क्या हमने प्रभु के रूप में उसका अंगीकार कर लिया है? क्या हमने उसके नाम में बपतिस्मा लेकर उसे पुकारा है? क्या हम मसीही जीवन में उसके साथ चलते हुए उसे पुकारते रहते हैं? क्या प्रभु के साथ हमारे सम्बन्ध में *किसी प्रकार की* कमी है? यदि हां तो हम अपनी आवश्यकता को मानकर प्रभु और उसके ढंग को मानने में फुर्ती करें। मैं कठोर नहीं होना चाहता, परन्तु मुझे स्पष्ट बात करनी अच्छी लगती है: यदि आप खोए हुए हैं, तो आप अपने सिवाय किसी दूसरे पर दोष नहीं लगा सकते!

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

हमारे वचन पाठ में दो तरह से भिन्नताएं हैं- व्यवस्था बनाम विश्वास-बार-बार (9:30, 31; 10:3, 5, 6)। आप ''आप किसी मार्ग पर हैं?'' पर सिखा या प्रचार कर सकते हैं। आपका परिचय मत्ती 7:13, 14 में यीशु के कथन से दिया जा सकता है।

पूरे वचन पाठ में काम करने के बाद मैंने उन विभिन्न स्थानों पर संकेत देने की कोशिश की है, जहां आप रुककर अपने सुनने वालों के लिए प्रासंगिकता बना सकते हैं। खोए हुओं की चिंता की आवश्यकता, खोए हुओं के लिए प्रार्थना की आवश्यकता और बिना ज्ञान के धुन के खतरे सहित कई प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं। अतिरिक्त पाठों के परिचय के लिए जैसे ''मसीह, ठोकर खिलाने का पत्थर'' (9:32, 33);[35] ''मैंने इसे अपने ढंग से किया'' (10:3); ''उद्धार के निमित्त अंगीकार'' (10:9, 10) और ''प्रभु का नाम पुकारना'' (10:12, 13) वचनों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]लियोनर्ड लुईस लेविनसन, *वेबस्टर'स अनफ्रेड डिक्शनरी* (न्यू यॉर्क: पोलियर बुक्स, 1967), 206 में उद्धृत, अम्ब्रोस बीरेस। [2]कोई शक नहीं कि आपको दूसरों पर दोष लगाने वाली कहानियां पता होंगी। एक बार मैं एक स्त्री को समझा रहा था, जिसका पति अपने गुस्से पर काबू नहीं पा सकता था। पति ने मुक्का मारकर खिड़की तोड़ डाली थी, जिससे कांच बुरी तरह से बिखर गया और उसे भी चोटें आई थीं। ऐसा करने के बाद अपना लहू-लुहान हाथ ऊपर उठाते हुए उसने अपनी पत्नी से कहा, ''देख तूने यह क्या कर दिया!'' [3]क्रेग ब्रेन लारसन, संस्क., *इलस्ट्रेशंस फ़ॉर प्रीचिंग एण्ड टीचिंग* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1993), 234 में उद्धृत। [4]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू*

द *रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 374, एन. 135. [5]लेखक अपने आप को इस प्रश्न से इस प्रकार जोड़ते हैं: क्या पौलुस के कहने का अर्थ ''धार्मिकता दिलाने वाली व्यवस्था,'' ''धार्मिकता की प्रतिज्ञा वाली व्यवस्था,'' या ''धार्मिकता (कर्मों से) पाने के लिए व्यवस्था (नियम)'' था। कइयों का विचार था कि पौलुस मूसा की व्यवस्था की बात कर रहा था जो यहूदियों को धार्मिकता (मसीह तक) में अगुआई के लिए बनाई गई थी (देखें गलातियों 3:24)। [6]डब्लयू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि. *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 606. [7]पुराने नियम का हवाला इस तथ्य का संकेत देता था कि अपने आश्रय के स्थान के रूप में यहूदियों ने परमेश्वर को ठुकरा दिया था। नये नियम के लेखकों ने इस वचन को यीशु पर लागू किया। [8]वाइन, 441. [9]सी. एफ. हॉग एण्ड डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एपिस्टल टू द गलेशियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1921), 262. NASB वाली मेरी प्रति में यह नोट है: ''मूल[तया] लज्जित करना।'' [10]वही, 681.

[11]मौरिस, 378 में उद्धृत। [12]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: समुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 181. [13]वाइन, 348. [14]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 280. [15]अपने क्षेत्र में पाए जाने वाले ''स्वर्ग में जाने'' के मनुष्य के कुछ ढंगों को शामिल करने के लिए आप इसे विस्तार दे सकते हैं। [16]यह शब्द फ्रैंक सीनेटरा (पोल एटीर, ''माई वे'' [1968] द्वारा प्रसिद्ध किए गए एक गीत से लिए गए हैं)। [17]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर टू पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 190. [18]*रोमियों, 3* पुस्तक के पाठ ''मसीही व्यक्ति और व्यवस्था (7:1-14)'' में 7:1-6 पर टिप्पणियां देखें। [19]*रोमियों, 1* पुस्तक में ''मुख्य बात (1:16, 17)'' पाठ में ''विश्वास से जीवित रहेगा'' वाक्यांश पर टिप्पणियां देखें। [20]वाइन, 75.

[21]मौरिस, 383. [22]स्पष्टतया इसके अपवाद हैं-जो लोग किसी न किसी कारण अपने कामों के लिए उत्तरदायी नहीं हैं। परन्तु पौलुस के मन में अपवाद नहीं, नियम था। [23]जे. ए. थॉम्पसन, डियूट्रोनमी, टिंडेल ओल्ड टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1974), 286. [24]स्टॉट, 283. [25]''मन से'' (ऊपरी तौर पर नहीं) बातें करने के महत्व पर रोमियों की पूरी पुस्तक में ज़ोर दिया गया है (जैसा 6:17, 18 में)। [26]सी. ई. बी. क्रेनफील्ड, *रोमन्स: ए शॉर्टर कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 258. [27]कई टीकाकार रोमियों 10:9, 10 पर टिप्पणी करते हुए बपतिस्मे से पहले अंगीकार का उल्लेख करते हैं। [28]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 122 से लिया गया। [29]डी. एफ. हुडसन, *टीच योरसेल्फ न्यू टैस्टामेंट ग्रीक* (लंदन: इंग्लिश यूनिवर्सिटीज़ प्रैस, 1960), 106. [30]ब्रूस, 193.

[31]कुछ ऐसे धनवान लोगों का नाम लें, जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों। यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास की सैटिंग में करते हैं तो आप नाम बताने के लिए क्लास में बैठे लोगों से कह सकते हैं। [32]मौरिस, 388. [33]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इनटू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोनटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 311. [34]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 333. [35]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 352-57 में ''क्राइस्ट द लिविंग स्टोन'' शीर्षक से एक अतिरिक्त भाग है।